मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय

Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya

परिचायिका

2023-2024

- देवास मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) 456 010
- E-mail : regpsvvmp@rediffmail.com
- Website : www.mpsvv.ac.in

महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः

उज्जयिनी (म.प्र.)

कुलगानम्

श्रीविशालामहाकालशिप्राङ्गणे
पाणिनेर्विश्वविद्यालयो राजते ।।
श्रीविशाला..........

वेदवेदाङ्गसाहित्यशिक्षाकला-
योगवेदान्तशास्त्रादिमीमांसया ।
कालिदासादिविद्वत्प्रभाभासिता
सा सभा विक्रमस्य प्रवृत्ता पुनः ।।1।।
श्रीविशाला..........

धाम्नि सान्दीपनेः कृष्णभक्तयन्विते
मुक्तये ब्रह्मनिर्वाणशीला वयम् ।
भौतिकं मङ्गलं शक्तिमाध्यमात्मिकीं
नैतिकोत्कर्षरीतिं च शिक्षामहे ।।2।।
श्रीविशाला..........

विश्वबन्धुत्वभावैकलक्ष्योन्मुखो
राष्ट्रनिर्माणकार्ये च दीक्षारतः ।।
संस्कृतं नाम दैवीं गिरां संस्कृति -
मुद्यतोऽयं पुना राजितुं भूतले ।।3।।

श्रीविशालामहाकालशिप्राङ्गणे
पाणिनेर्विश्वविद्यालयो राजते ।।

कुलपतिसन्देशः

यावदस्ति त्रयी लोके चतुर्मुखमुखोद्भवा ।
तावदेषा देवभाषा, देवी स्थास्यति भूतले ॥

प्रो. विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

महाकविदण्डी काव्यादर्शे अवादीत् संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाख्याता महर्षिभिः दिव्यतायुक्तेयं भाषा अत एव वैश्विकविविधसमास्यायाः परिहारः अनया निबद्धैः विषयैः जायते इति सर्वविदितं जगत्सु । चत्वारो वेदाः षट्शास्त्राणि आयुर्वेदादयः याज्ञवल्क्यस्मृत्यादयः इति सर्वे जीवमात्रस्य कल्याणाय प्रयतन्ते। अस्माकं विश्वविद्यालयस्य आचार्याः विद्यार्थिनः ज्ञानेन विज्ञानेन राष्ट्रस्य सन्निर्माणे मानवर्द्धने च आधारस्तम्भाः भवेयुरिति में द्रढीयान् विश्वासः। आत्मनिर्भरभारतस्य परिकल्पना यद्यपि संस्कृतविद्यायां भूयो भूयो विद्यते तथापि नवशिक्षानीतिरीत्या नूनं हि अध्येतारः सर्वाङ्गीणविकासयुजः भवेयुरिति कामायमानः। समेषां कल्याणमनेन मन्त्रेण आमन्त्रये।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुः खभाग्वेद् ॥

कुलसचिवसन्देशः

प्रो. दिलीप सोनी
कुलसचिव

पुरा काल से ही उज्जयिनी नगरी ज्ञान परम्परा की संरक्षिका रही है। व्याकरण शास्त्र के परमाचार्य महर्षि पाणिनि के नाम से प्रसिद्ध महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय सतत् विद्या तथा वैदिक वाङ्मय से समाज को अवगत करा रहा है। यहाँ के छात्र विविध क्षेत्रों में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करके राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। संस्कृत भाषा में निबद्ध विषयों में अनुसन्धान की अनन्त सम्भावनाएँ है। नई शिक्षा नीति के अनुसार विश्वविद्यालय में अध्ययन आरम्भ हो चुका है। संस्कृत विद्या में विधि, विज्ञान, अभियान्त्रिकी, चिकित्सा, इतिहास आदि के विविध सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। छात्रों का सर्वाङ्गीण विकास पारम्परिक विद्याओं के अध्ययन से सम्भव है, क्योंकि शुद्ध उच्चारण, योग, नीति, मूल्य तथा शारीरिक श्रम का अभ्यास आरम्भ से ही करा दिया जाता है। समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का सामर्थ्य संस्कृत विद्या में है। असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय जैसे पारमार्थिक वचन इस विद्या के रहस्य के प्रतीक हैं। मेरा नवाङ्कुर पीढ़ी के अभिभावकों से आग्रह है कि उनको संस्कृत के पारमार्थिक ज्ञान से अवगत करायें।

VISION

भारतीयज्ञानपरम्परायाः निरन्तरप्रवाहाय नवाचाराः।

भारतीय ज्ञान परम्परा के सतत् प्रवाह के लिए नवाचार।

- विभिन्न विषयों में आधुनिक नवाचार और प्रगति के साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान के कालातीत ज्ञान को एकीकृत करना।

MISSION

प्राच्यसंस्कृतज्ञानविज्ञानपरम्परां प्रसारयितुं नवाचारैः सह परम्परागतशिक्षणपद्धतिम् अनुसृत्य शिक्षणं शोधकार्यं च कर्तुं दीपशिक्षारूपेण स्वस्य प्रतिष्ठापनम्।

उद्देश्य –

- प्राच्य संस्कृत ज्ञान और विज्ञान की परंपरा को प्रसारित करने के लिए नवाचारो के साथ पारंपरिक शिक्षण विधियों का पालन करते हुए शिक्षण और अनुसंधान कार्य के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में स्थापित करना।
- संस्कृत विरासत को एक प्रकाश स्तंभ के रूप में स्थापित करना, जिससे एक गतिशील शिक्षण वातावरण को बढ़ावा मिल सके एवं परंपरा को नवीनता से प्रस्तुत किया जा सके।
- अनुशासन, छात्रवृत्ति, अनुसंधान उत्कृष्टता और सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से हमारा लक्ष्य व्यक्तिगत विकास, सांस्कृतिक संवर्धन और सामाजिक जानकारी के लिए उत्प्रेरक बनना है, जिससे विश्व में संस्कृत ज्ञान की स्थायी प्रासंगिकता सुनिश्चित हो सके।

विश्वविद्याल में संचालित परियोजनायें

विश्वविद्यालय में अनेक परियोजनायें केन्द्रीय तथा प्रादेशिक संस्थाओं के सहयोग से संचालित है। विवरण निम्नानुसार है :-

1. शास्त्रार्थ कौशल प्रशिक्षण परियोजना (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा प्रणेता चलचित्र निर्माण परियोजना (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)।
3. शास्त्र सुधा परियोजना (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)।
4. सांध्य संस्कृत विद्यालय परियोजना (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)।
5. महर्षि पाणिनि प्राध्यापक पीठ (महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल)।
6. भारतीय ज्ञान परम्परा परियोजना, IKS सेन्टर, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त।
7. ग्रामवास्तु प्रेक्षण परियोजना IKS सेन्टर, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त।

विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में माननीय कुलाधिपति महोदय तत्कालीन उच्च शिक्षा मंत्री एवं वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री जी, इसरो प्रमुख श्रीधर सोमनाथ एवं मा. कुलगुरु एवं कुलसचिव जी।

विश्वविद्यालय का प्रतीकचिन्ह् तथा आदर्शवाक्य

प्रतीक चिह्न – महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना के उपरान्त विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने हेतु एक प्रतीक चिह्न को स्वीकार किया गया है। इस प्रतीक चिह्न में आभायुक्त दैदीप्यमान सूर्य, महाकालेश्वर मन्दिर का उत्तुंग शिखर, कलश एवं ध्वजा विद्यमान है। चिह्न के मध्य में प्रफुल्लित पद्मपुष्प (कमल पुष्प), पद्मपत्र (कमल के पत्ते), वाम एवं दक्षिण दिशा की ओर मुख किये हुए हंसयुगल विद्यमान हैं जो कि निर्मल प्रवाहमान जलधारा में स्थित है।

विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न भारतीय चिन्तनसरणि, उदात्तमनीषा, सत्संकल्प तथा दिव्य संस्कार को अभिव्यञ्जित करता है। आभायुक्त सूर्य की दिव्य कान्ति सत्य एवं ज्ञान के प्रकाश तथा तप की द्योतक है। महाकालेश्वर मन्दिर का उत्तुंग शिखर श्रेष्ठता, उत्कर्ष एवं उन्नति तथा कलशज्ञानामृत के संग्रह एवं संरक्षण का परिचायक है। प्रवाहमान ध्वजा उत्साह, ओज एवं प्रसार की सूचक है। प्रफुल्लित कमल पुष्प विविधता में एकात्मता के साथ समृद्धि, पवित्रता, सौन्दर्य तथा सुगन्धि का सन्देश दे रहा है। कमल पत्र निष्काम कर्मयोग एवं समर्पण भाव को अभिव्यक्त कर रहे है। हंसयुगल सौम्यता, शुभ्रता, गुणग्राहिता, विवेकशीलता एवं ज्ञान-विज्ञान के परिचायक हैं तथा प्रवाहमान निर्मल जलधारा शास्त्र परम्परा एवं संस्कृति को अविरल प्रवाहमान रखने, अग्रसारित करने एवं दोष रहित रखने की द्योतक है।

आदर्श वाक्य विश्वविद्यालय का आदर्श एवं ध्येय वाक्य **"संस्कृतं नाम दैवीवाक्"** है। यह आदर्श वाक्य महाकवि दण्डीकृत काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद की 33वीं कारिका का प्रथम चरण है, जिसका भावार्थ है-महर्षियों ने संस्कृतभाषा को दिव्य वाणी कहा है। संस्कृत भाषा पूर्णतः शुद्ध परिष्कृत, दोष रहित एवं संस्कारयुक्त है, अतः दैवी (दिव्य) भाषा है, जिसके व्यवहार मात्र से व्यक्ति देवत्व को प्राप्त होता है।

इस प्रकार विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न स्वतः अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, परम्परा, उत्साह, समृद्धि, विवेक तथा संस्कृति के प्रवास का दिव्य समन्वय है।

विश्वविद्यालय की स्थापना एवं आरम्भ

1. संस्कृत भाषा एवं प्राचीन ज्ञान-विज्ञान परम्परा के संरक्षण अभिवर्धन एवं उन्मुखीकरण के लिए मध्यप्रदेश की प्राचीन पौराणिक नगरी, उज्जैन में मध्यप्रदेश शासन के संकल्प से संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस हेतु शासन द्वारा महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 (क्रमांक 15 सन् 2008) के अन्तर्गत 15 अगस्त 2008 को महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 2 (एफ) के अधीन मान्यता प्राप्त है।

2. स्थापना के उपरान्त दिनांक 17 अगस्त 2008 को मध्यप्रदेश राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराजसिंह चौहान की अध्यक्षता में तत्कालीन राज्यपाल एवं कुलाधिपति माननीय श्री बलराम जाखड़ द्वारा विश्वविद्यालय का विधिवत् शुभारम्भ किया गया। उज्जैन के देवास मार्ग स्थित बृजमोहन बिड़ला शोध संस्थान परिसर में शुभारम्भ विधि को सम्पन्न किया गया, जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधियों सहित प्रशासन एवं गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

3. क्षिप्रांजलि न्यास की भूमि में स्थित बृजमोहन बिड़ला शोध संस्थान परिसर के भवन में किराया अनुबन्ध के आधार पर कक्षों को आवंटित कर विश्वविद्यालय का प्रशासनिक कार्यालय दिनांक 17 अगस्त 2008 से विधिवत् प्रारम्भ किया गया। प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त स्थान की उपलब्धता के आधार पर अध्ययन-अध्यापन आरम्भ करने की दृष्टि से इसी भवन में छात्रों के उपयोग हेतु पुस्तकालय एवं शैक्षणिक कार्यों की गतिविधियाँ भी आरम्भ की गई।

4. विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु सुरम्य परिसर निर्माण एवं शैक्षणिक उपयोग के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा उज्जैन नगर के देवास मार्ग पर सीमान्त ग्राम मानपुरा, लालपुर में मुख्य मार्ग पर 10 हेक्टेयर (25 एकड़) भूमि का आवंटन किया गया। विश्वविद्यालय के लिए आवंटित भूमि का अवलोकन एवं भूमि पूजन मध्यप्रदेश शासन के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के कर-कमलों द्वारा दिनांक 22 जनवरी 2009 को सम्पन्न हुआ।

5. विश्वविद्यालय की स्थापना के मूल सिद्धान्तों को विस्तारित करने के उद्देश्य से दिनांक 25.03.2010 को मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन के अधिनियम में एवं वैदिक शब्द को जोड़ने के सम्बन्ध में संशोधन प्रस्ताव पारित किया गया। उक्त संशोधन पारित होने के उपरान्त इस विश्वविद्यालय का नाम महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय के स्थान पर महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय हुआ।

स्थापना एवं नामकरण

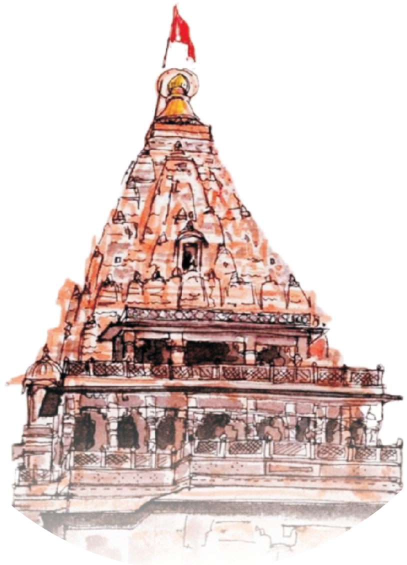

मध्यप्रदेश शासन द्वारा महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 (क्रमांक 15 सन् 2008) दिनांक 15.08.2008 के अंतर्गत मध्यप्रदेश में प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

अपने उच्चारण वैशिष्ट्य, वर्णमाला तथा सुस्पष्ट व्याकरण के कारण विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के सर्वमान्य व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ के जनक महर्षि पाणिनि के सम्मान में इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

उज्जैन भगवान् महाकाल की भूमि है। शिव वेदों में रुद्र नाम से पुकारे गये है। व्याकरण शास्त्र की उत्पत्ति शिव के डमरू से निकले चतुर्दश (14) महेश्वर सूत्रों से मानी गयी है। शिव के ताण्डव से नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति मानी जाती है, जो कि संगीत, साहित्य आदि कलाओं का बीज ग्रन्थ है। काल के नियामक के रूप में भी महाकाल मान्य है। उनकी इस भूमिका का जगत् में विशिष्ट महत्त्व है। भगवान् शिव बिना किसी भेद के सम्पूर्ण चराचर जगत् में सबको अपनाते है।

सब संस्कृत के लिए और संस्कृत सबके लिए इस भावना से कार्य करने वाले इस विश्वविद्यालय के लिए ऐसे शिव की पावन धरा का आश्रय लेना उपयुक्त ही है। साथ ही यह भूमि जगद्गुरु श्री कृष्ण की शिक्षा स्थली रही है। सान्दीपनि जैसे गुरु, कालिदास सदृश कवि, वराहमिहिर जैसे ज्योतिषी, विक्रमादित्य जैसे सम्राट आदि महान विभूतियों की यह कर्मभूमि है। इस उज्जयिनी के विषय में प्रसिद्ध है कि यहाँ अन्तः पुर की स्त्रियाँ भी संस्कृत बोलती थीं। स्त्री शिक्षा और सर्व शिक्षा को सर्वप्रथम साकार करने वाली यही धरा रही है। एतदर्थ संस्कृत विश्वविद्यालय के कार्यस्थल के रूप में उज्जैन का चयन अत्यन्त उपर्युक्त है।

विश्वविद्यालय का स्वरूप

पुराण प्रसिद्ध उज्जयिनी नगरी के निकट देवास मार्ग पर एक रमणीय उपत्यका (घाटी) क्षेत्र में विश्वविद्यालय परिसर विस्तीर्ण है। एक भव्य द्वार से प्रवेश करने के उपरान्त आपका प्रवेश विश्वविद्यालय के प्रथम प्रशासनिक परिसर **पञ्चवटी** में होगा। यह परिसर पाँच भवनों, मध्य के विशाल चत्वर (चबूतरे) तथा सुन्दर सुरभित वाटिका के कारण प्राचीन गुरुकुल का आभास देता है। नवागत प्रेक्षक को यह स्थान अद्भुत आनन्द और शान्ति प्रदान करता है। इस परिसर के निकट से चलकर चहुँ ओर हरे-भरे पुष्पित पादपों का अवलोकन करते हुए आप जैसे-जैसे अधित्यका पर चढ़ते हैं, आपको योगेश्वर श्रीकृष्णयोग भवन तथा आचार्य सांदीपनि भवन दिखाई देते है और ऊपर बढ़ने आपको **पतञ्जलि** भवन के दर्शन होते हैं, जिसमें विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग है। यहाँ प्राङ्गण में खड़े होकर आप उन आधार भूमियों की ओर दृष्टिपात करते हैं, जहाँ शीघ्र ही विस्तृत शैक्षणिक परिसर, प्रशासनिक परिसर, विशाल सभागार आदि भवनों का निर्माण प्रस्तावित है। यहाँ से थोड़ी और ऊँचाई पर पहुँचकर आपको विशाल मैदान के दर्शन होते हैं, जहाँ बहुद्देशीय क्रीडांगण, वेधशाला आदि का निर्माण कल्पित है। साथ ही परिसर में भरत रंगमंच, नक्षत्र वाटिका, नवग्रह वाटिका, नलिन सरोवर, यज्ञशाला, पुस्तकालय भवन, वैदिक यज्ञीय उपकरण संग्रहालय, ज्योतिष प्रयोगशाला, कम्प्युटर प्रयोगशाला, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, उच्चारण तथा ध्वनि अनुसन्धान केन्द्र, छन्द मन्दिर, संस्कृत वीथिका, शिक्षा सुभाषित भित्ति, फलोद्यान, आवासगृह आदि के निर्माण की योजना प्रस्तावित है। भविष्य में यह परिसर देश-विदेश के छात्रों , शिक्षाविदों तथा यात्रियों के लिए आकर्षण तथा प्रेरणा का केन्द्र रहेगा।

विश्वविद्यालयीन प्रकाशन

विश्वविद्यालय द्वारा शोध अनुसंधान एवं गवेषणा की प्रवृत्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से त्रैमासिक यू.जी.सी. सान्दर्भिक शोधपत्रिका पाणिनीया ISSN-2321-7626 का प्रकाशन निरन्तर किया जा रहा है। पत्रिका में संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में ख्यातिलब्ध विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

शोध एवं अनुसन्धान

विद्यावारिधि (Ph.D.) विश्वविद्यालय में स्थापित वेद विभाग, व्याकरण विभाग, संस्कृत साहित्य विभाग, विशिष्ट संस्कृत विभाग, योग विभाग, शिक्षाशास्त्र विभाग, दर्शन विभाग, ज्योतिष विभाग, ज्योतिर्विज्ञान एवं वास्तु विभाग आदि विभागों में विद्यावारिधि (Ph.D.) उपाधि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार प्रदान की जाती है। सम्बन्धित विषय में शोध प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर विशेषज्ञ विद्वानों के मार्गदर्शन में शोध कार्य किया जा सकता है।

विभाग परिचय

वेद एवं व्याकरण विभाग

परिचय – व्याकरण सदैव भाषा अध्ययन का एक अभिन्न अंग रहा है। पाणिनीय व्याकरण को मानव मस्तिष्क की सबसे महान कृतियों में से एक माना जाता है। संस्कृत व्याकरण का अध्ययन सहयोगी भारत-यूरोपीय भाषाओं के आलोक में तुलनात्मक आधार पर किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में संस्कृत शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया है। वेद अपने आप में शोध एवं शिक्षा की अपार संभावनाएँ रखते है। संस्कृत साहित्य को समझने के लिए वेद और व्याकरण का ज्ञान महत्वपूर्ण है। संस्कार एवं व्यवहार में परिष्कार भारतीय शास्त्रों से ही संभव है।

वेद एवं व्याकरण विभाग सत्र 2012 से स्थापित है। विभाग स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करता है। स्नातकोत्तर (आचार्य) (पीजी) नव्यव्याकरण, प्राचीन व्याकरण, शुक्लयजुर्वेद, (एम.ए.) वैदिक अध्ययन, स्नातक पाठ्यक्रम (शास्त्री) (यूजी) नव्यव्याकरण, प्राचीन व्याकरण, शुक्लयजुर्वेद, डिप्लोमा (पीजी) पौरोहित्य कर्मकाण्ड, डिप्लोमा (यूजी) पौरोहित्य कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम संचालित करता है। विषय को रोचक तरीके से पढ़ाने के लिए विद्वान शिक्षक तत्परता से कार्यरत है। सत्र 2023-2024 से वेद विभाग स्वतंत्र रूप से कार्यरत है।

ध्येय वाक्य- **वाग्वैब्रह्म**
(छान्दग्योपनिषद्)
(शुद्ध वाणी ही ईश्वर है)

संस्कृत साहित्य विभाग

परिचय – संस्कृत भाषा और साहित्य भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक लोकाचार का आधार है। साहित्य किसी भी सामाजिक समाज की रीढ़ होता है। समृद्ध भारतीय साहित्य मुख्यतः संस्कृत भाषा में रचा गया है। प्राचीन भारत में संस्कृत मातृभाषा थी। वाल्मिकी, वेदव्यास, भरत मुनि, कालिदास, दण्डी, बाणभट्ट, राजशेखर जैसे कई लोकप्रिय लेखक हुए हैं। मम्मट और कई अन्य जिन्होंने अपने विपुल लेखन के माध्यम से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। संस्कृत साहित्य एवं दर्शन विभाग वेद, वेदांग एवं साहित्य संकाय के अंतर्गत आता है। विभाग का प्रारम्भ सत्र 2012 में हुआ था। इसके अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य की विभिन्न शाखाओं, ग्रंथों में निहित दर्शन से अवगत कराना और इसमें निहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली के सूत्रों को बतलाना है।

संचालित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (पीजी) (आचार्य) साहित्य, स्नातक (यूजी) (शास्त्री) साहित्य, डिप्लोमा (पीजी) संस्कृत पत्रिकारिता एवं जनसंचार, नाट्यशास्त्र और रंगमंच पाठ्यक्रम, डिप्लोमा (यूजी)पर्यटक मार्गदर्शक संचालित किए जाते है।

ध्येय वाक्य-**सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्**
महान श्रवण वाली सरस्वती की महिमा हो।

ज्योतिष ज्योतिर्विज्ञान एवं वास्तु विभाग

परिचय – सत्र 2012 से स्थापित ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान संस्कृत अध्ययन के सबसे उभरते क्षेत्रों में से एक है। महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय के अन्य विभागों में से ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग का उज्जैन नगर से प्रगाढ़ संबंध है। प्रारंभ में विभागों को ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान के रूप में संचालित किया गया था, लेकिन बाद में स्वतन्त्र विभाग के रूप में गठन किया गया। विभाग ज्योतिष और सिद्धांत ज्योतिष के लिए शास्त्री और आचार्य दोनों पाठ्यक्रम चलाता है। ये सभी पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है।

ज्योतिष और ज्योतिर्विज्ञान की सामग्री साहित्यिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विभाग खगोलीय और वास्तुकला अध्ययन के इस प्राचीन खजाने के पुनरुद्धार के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। विभाग का लक्ष्य ज्योतिर्विज्ञान और उसके संबद्ध विषयों में निहित ज्ञान को संरक्षित करना है। सत्र 2023-2024 से वास्तु एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग स्वतन्त्र विभाग के रूप में स्थापित किए गए है।

संचालित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (पीजी) (आचार्य), सिद्धान्त ज्योतिष, फ लित ज्योतिष, एम.ए. (पीजी) ज्योतिर्विज्ञान, वास्तुशास्त्र, स्नातक (यूजी) (शास्त्री) सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, डिप्लोमा (यूजी) मंदिर प्रबन्धन, ज्योतिर्विज्ञान, वास्तु, वैदिक गणित, कृषि ज्योतिष, धर्मशास्त्रीय ज्योतिष, खगोल एवं वेध परम्परा, देव प्रतिमा एवं चित्र विधान, भारतीय गणित आदि पाठ्यक्रम संचालित किए जाते है।

ध्येय वाक्य
वेदाङ्गं ज्योतिषं ब्रह्म
वेदाङ्ग ज्योतिष ही ब्रह्म है।
(बृहस्पति संहिता)

विभाग परिचय

विशिष्ट संस्कृत विभाग

परिचय – संस्कृत भाषा मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। यह ग्रीक से अधिक परिपूर्ण है, लैटिन से अधिक प्रचुर है, और अपनी अद्‌भुत संरचना के कारण अधिक उत्कृष्ट रूप से परिष्कृत है। संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा मानी जाती है। इसका उपयोग भारतीय इतिहास के सभी कालखंडों में काव्यात्मक और अन्य साहित्यिक कार्यों के लिए किया जाता है और आज भी जारी है। विशिष्ट संस्कृत विभाग छात्रों को संस्कृत साहित्य के कुछ चुनिंदा ग्रंथ पढ़ाता है जो मानवतावादी और कलात्मक गतिविधियों के आदर्श उदाहरण हैं। इस तरह के अध्ययन से छात्रों में अच्छे नैतिक मूल्यों का विकास होता है और हमारा कायाकल्प भी होता है।

विश्वविद्यालय के विशिष्ट संस्कृत विभाग की स्थापना वर्ष 2012 में हुई थी। इसका उद्देश्य विभिन्न वेद, वेदांगों में निहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रसार करना है। पुराण, दर्शन और उपनिषद। विभाग स्नातक और स्नातक स्तर पर विभिन्न पाठ्यक्रम चलाता है। विभाग में पढ़ने वाले छात्र वेद, विद्या, उपनिषद, पुराण, दर्शन, भाषा विज्ञान और संस्कृत साहित्य की अन्य शाखाओं जैसे विषयों का अध्ययन करते हैं।

संचालित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (पी.जी.) (एम.ए.) संस्कृत, हिन्दू अध्ययन, स्नातक (यू.जी.) (बी.ए. ऑनर्स) संस्कृत, डिप्लोमा (यू.जी.) संस्कृत सम्भाषण आदि पाठ्यक्रम संचालित किए जाते है।

ध्येय वाक्य

सा विद्या या विमुक्तये

वही ज्ञान है जो मुक्ति की ओर ले जाता है।

(वि.पु. 1/41/19)

72

योग विभाग

परिचय – योग विभाग की स्थापना वर्ष 2018 में की गई। योग विभाग का मुख्य उद्देश्य योग की परम्परा को वैज्ञानिक तरीके से युवा पीढ़ी को हस्तांतरित करना है। विभाग योग से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे एम.ए. योग और यौगिक अध्ययन में यू.जी.डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाता है। पाठ्यक्रम मुख्य रूप से हिन्दी भाषा में आयोजित किए जाते हैं, लेकिन योग पाठ को समझने के लिए पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषण का विषय भी शामिल किया गया है। योग अव्यवस्थित जीवनशैली से पैदा हुई कई समस्याओं का समाधान करता है। इसलिए छात्रों के लिए योग पाठ्यक्रम के अंतर्गत योग थैरेपी को भी सम्मिलित किया गया है। शिक्षक नियमित रूप से सुबह की व्यावहारिक कक्षाएं लेते हैं, ताकि छात्रों को विभिन्न यौगिक मुद्राएं और आसन सीखने को मिलें।

संचालित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (पी.जी.) (एम.ए.) योग, एम.एस.सी. योग (योग विज्ञान) , स्नातक (यू.जी.) बी.पी.ई.एस. (शारीरिक शिक्षा एवं खेल), (बी.ए. ऑनर्स) योग, डिप्लोमा (यू.जी.) योग, योग आहार एवं पोषण, डिप्लोमा (पी.जी.) योग आदि पाठ्यक्रम संचालित किए जाते है।

ध्येय वाक्य

योगस्थः कुरू कर्माणि

योगी बन कर्म करो

(भगवद्गीता 2.48)

दर्शन विभाग

परिचय – दर्शन संकाय के अन्तर्गत दर्शन विभाग संचालित है। स्वतंत्र रूप से यह विभाग सत्र 2021 से संचालित है। भारतीय पारम्परिक दर्शनशास्त्रीय परम्परा के संरक्षकार्थ एवं संवद्धनार्थ यह विभाग गठित किया गया है। वर्तमान में न्याय दर्शन तथा अद्वैत दर्शन पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे है।

संचालित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (पी.जी.) आचार्य अद्वैत वेदान्त दर्शन, न्याय दर्शन, स्नातक (यू.जी.) शास्त्री न्याय दर्शन, अद्वैत वेदान्त दर्शन, डिप्लोमा (पी.जी.) वैदिक विधि शास्त्र, तर्कशास्त्र, वैदिक भौतिक विज्ञानम्, डिप्लोमा स्नातक (यू.जी.) श्रीमद्भगवद्गीता, वेदान्त दर्शन आदि पाठ्यक्रम संचालित किए जाते है।

ध्येय वाक्य

तत्त्वमसि

(ब्रह्म तुम ही हो)

विभाग परिचय

शास्त्री+शिक्षाशास्त्र विभाग

परिचय – विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग वर्ष 2018 में स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना का एकमात्र उद्देश्य छात्रों को योग्य अध्यापक बनाना है। विश्वविद्यालय चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम चलाता है। पाठ्यक्रम विभिन्न शिक्षण कौशलों के ज्ञान और छात्रों को प्रभावी तरीके से ज्ञान प्रदान करने की पद्धति से संबंधित है।

बी.ए.बीएड. पाठ्यक्रम न केवल छात्रों को अच्छे शिक्षण कौशल सिखाता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि शैक्षिक प्रणाली के प्रशासनिक ब्लॉक में कैसे कार्य किया जाए। ये कौशल उन्हें शिक्षण के लिए विभिन्न तकनीकी पहलुओं के विषय में निपुण बनाते हैं। छात्र दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, नैतिक मूल्यों जैसे विभिन्न विषयों का अध्ययन करते हैं। उनके समग्र विकास और सांसारिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए शिक्षण, अनुसंधान पद्धति, संस्कृत और विभिन्न अन्य विषय। संस्कृत भाषा का अध्ययन उन्हें भाषा के बारे में अपने ज्ञान को अच्छा बनाने में सहयोग करता है। यह हमारे प्राचीन नैतिक मूल्यों के अध्ययन और संरक्षण में भी सहयोग करता है।

छात्रों को अभ्यास शिक्षण कराया जाता है जिससे वे स्थूल और सूक्ष्म दोनों शिक्षण कौशल प्रभावी ढंग से सीख सकें। विभाग छात्रों के कौशल को विकसित करने के लिए विभिन्न पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का उपयोग करता है। बी.ए.बीएड. डिग्री रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम है, जहाँ छात्रों का समग्र विकास होता है।

संचालित पाठ्यक्रम स्नातक (यू.जी.) शास्त्री+शिक्षाशास्त्री B.A.B.Ed., डिप्लोमा (पी.जी.) (कम्प्युटर) पीजीडीसीए पाठ्यक्रम संचालित किए जाते है।

आधुनिक विभाग के अंतर्गत डिप्लोमा (यूजी) में पुस्तकालय विज्ञान पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है।

ध्येय वाक्य
शिक्षयेत्पुरुष कर्म कर्मणा येन जीवति
मनुष्य को जिस कर्म से जीवन जीना है, उसे ही करना सीखना चाहिए।
(वि.धर्मा पु. 3303/12)

संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण तथा ज्ञान विज्ञान संवर्धन केन्द्र

परिचय – विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2018 में संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण तथा ज्ञान विज्ञान संवर्धन केन्द्र की स्थापना की गई थी। इस विभाग की स्थापना का मुख्य उद्देश्य आम जनमानस तक संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार करना था। पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय छात्रों को संस्कृत का ज्ञान देने के लिए अपने स्तर पर कार्य कर रहा था। किन्तु शनैः शनैः यह अनुभव हुआ कि औपचारिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है। संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। इसलिए, एक नया केन्द्र खोला गया, यह केन्द्र विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित करता है जो संस्कृत भाषा को समाज में लोगों तक पहुँचाता है। केन्द्र के द्वारा विश्वविद्यालय की अनेक गतिविधियाँ सुचारु रूप से संचालित होती है। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु केन्द्र एक प्रमुख माध्यम है।

कार्यक्षेत्र– केन्द्र का कार्यालय उज्जैन में है और इसका कार्य क्षेत्र संपूर्ण मध्यप्रदेश है। केन्द्र की स्थापना का एकमात्र उद्देश्य समाज में लोगों को संस्कृत भाषा से परिचित कराना है। तभी विश्वविद्यालय का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

केन्द्र सम्बद्ध महाविद्यालय एवं अन्य संस्थाओं के सहयोग से अनेक प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम कार्यशाला, व्याख्यानमाला, सम्भाषण शिविर, बाल केन्द्र, संवाद कार्यक्रम एवं अनेक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम संचालित करता है।

उद्देश्य –

1. संस्कृत भाषा के माध्यम से संस्कृत शिक्षा – आज संस्कृत के छात्र उच्च स्तरीय शास्त्रीय पाठ्यक्रम को केवल इसलिए नहीं समझ पाते है। क्योंकि उनमें संस्कृत भाषा का प्रवाह नहीं है। इसलिए छात्रों को संस्कृत सिखाने का एकमात्र समाधान संस्कृत भाषा का दीर्घकालिक अनुभव है। संस्कृत भाषा के माध्यम से संस्कृत पढ़ाना ही संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण ज्ञान एवं विज्ञान प्रचार सम्वर्द्धन केन्द्र का एकमात्र उद्देश्य है।

विभागाध्यक्ष एवं कार्यरत प्राध्यापक

डॉ. तुलसीदास परौहा
अध्यक्ष
साहित्य विभाग

डॉ. पूजा उपाध्याय
अध्यक्ष (प्र.)
विशिष्ट संस्कृत विभाग, शिक्षाशास्त्र विभाग एवं योग विभाग

डॉ. अखिलेशकुमार द्विवेदी
अध्यक्ष (प्र.)
व्याकरण विभाग, दर्शन विभाग एवं आधुनिक विभाग

डॉ. शुभम् शर्मा
अध्यक्ष (प्र.)
ज्योतिर्विज्ञान विभाग एवं वास्तु विभाग

डॉ. संकल्प मिश्र
अध्यक्ष (प्र.)
वेद विभाग

डॉ. उपेन्द्र भार्गव
अध्यक्ष (प्र.)
ज्योतिष विभाग

डॉ. अजय राठी
सहायक प्राध्यापक
विशिष्ट संस्कृत विभाग

डॉ. अनिल मुवेल
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत साहित्य विभाग

पाठ्यक्रम सहगामी कार्यक्रम

विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा प्रतिभा प्रकर्ष को दृष्टिगत करके निम्नलिखित सहगामी कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया जाता है।

1. **वाग्वर्धिनी सभा -** विद्यार्थियों की वाक् क्षमता, शास्त्रीय पाण्डित्य एवं विषय प्रतिपादन सामर्थ्य विकास के लिए परिसर में वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन प्रति सप्ताह किया जाता है। जिसमें आचार्यों के मार्गदर्शन में छात्र-छात्राएँ ज्योतिष, वेद, साहित्य, व्याकरण आदि विषयों की चर्चा तथा व्याख्यान प्रस्तुत करते हैं।

2. **शास्त्रार्थ प्रशिक्षण -** परिसर में विभिन्न शास्त्रों के मार्मिक एवं दुरुह पक्षों के परिष्कार हेतु विद्यार्थियों को शास्त्रार्थ का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें किसी शास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त पर पूर्वपक्ष तथा उत्तरपक्ष के साथ शास्त्र सम्मत प्रामाणिक तर्क उपस्थापित किये जाते हैं तथा उसके सैद्धान्तिक निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

3. **व्याख्यानमाला -** परिसर में शिक्षा सत्र के मध्य विभिन्न अवसरों पर शास्त्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाता है। जिसमें सम्बद्ध विषयों के पारंगत विद्वानों का व्याख्यान आयोजित किया जाता है। इससे छात्रों को अधीत शास्त्रीय विषय को व्यापकता से जानने का लाभ प्राप्त होता है।

4. **युवा महोत्सव -** परिसर में शिक्षा सत्र के मध्य युवा महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें अध्यापन विभाग के अतिरिक्त सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्रों को भी बुलाया जाता है। महोत्सव में अनेक शैक्षणिक तथा खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

5. **अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण -** विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त छात्रों के लिए वर्ष पर्यन्त संस्कृत सम्भाषण की निःशुल्क कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिससे छात्र संस्कृत बोलने, लिखने, पढ़ने तथा अनुवाद करने में समर्थ हो सकें।

6. **शोध संगोष्ठी -** शोधार्थियों तथा प्राध्यापकों के अनुसन्धानात्मक कौशल विकास के लिए समयानुसार शास्त्रीय विषयों पर केन्द्रित शोध संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य

इस विश्वविद्यालय में संचालित समस्त पाठ्यक्रम यू.जी.सी. तथा मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त है तथा अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के समान यहाँ के सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. के दिशा-निर्देशों के अनुसार संचालित किये जाते हैं।

संस्कृत विषय में इन्टिग्रेटेड बी.ए.बी.एड. (शास्त्री-शिक्षाशास्त्री) प्रारम्भ करने वाला यह देश का प्रथम विश्वविद्यालय है। चार वर्ष के सम्मिलित पाठ्यक्रमों में छात्र शिक्षाशास्त्र का अध्ययन भी करेगा और शास्त्री पाठ्यक्रम का भी जो उसके भविष्य के लिए उत्तम सिद्ध होगा।

साहित्य विषय में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त छन्द गायन की पद्धतियों, साहित्य एवं साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थों का उत्तमटीकाओं के सहयोग से अध्यापन किया जाता है।

विशिष्ट संस्कृत विषय में बी.ए. तथा एम.ए. कक्षाओं में समग्र संस्कृत वाङ् मय के चयनित बिन्दुओं को पाठ्यक्रमों में स्थान देकर वृत्ति केन्द्रित शिक्षण को प्रोत्साहित किया जाता है।

शुक्लयजुर्वेद की मौखिक परम्परा के संरक्षण के साथ सुप्रसिद्ध टीकाओं से अध्यापन किया जाता है।

नव्यव्याकरण के अध्यापन में उच्चारण वैशिष्ट्य को सरल उपायों से छात्रों के मस्तिष्क में सुस्थापित किया जाता है।

प्रायोगिक सर्वेक्षण (कुण्डली , हस्तरेखा) द्वारा फलित ज्योतिष। तथा यंत्र निर्माण एवं प्रयोग द्वारा सिद्धान्त ज्योतिष विषयों का अध्यापन होता है। नवीन शिक्षण पद्धति पर आधारित एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान तरुणों तथा वरिष्ठों को समान रूप से आकर्षित करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वास्तुशास्त्र के अनुसार भवनादि के मानचित्र निर्माण कर प्रायोगिक अध्ययन कराया जाता है। एम.ए. वास्तु के पाठ्यक्रम को शास्त्रीय आधार के साथ अभियान्त्रिकी, भूगोल और पुरातत्त्व सिद्धांतों से भी समृद्ध किया गया है ताकि विद्यार्थी वर्तमानकाल में एक सम्पूर्ण वास्तुविद् बन सके। योग विषय में दार्शनिक सिद्धांतों के साथ प्रायोगिक अध्ययन की सुविधा है। छात्रों में शास्त्रार्थ परम्परा के विकास एवं सम्वर्धन हेतु न्याय दर्शन का परम्परागत अध्यापन किया जाता है।

सम्बद्ध शासकीय/अशासकीय महाविद्यालय

क्रं.	महाविद्यालय का नाम	ई–मेल
1.	शासकीय मानमल मीमराज रुइया संस्कृत महाविद्यालय, चारधाम मंदिर के पास, उज्जैन (म.प्र.)	sanskritujn@yahoo.com
2.	शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, रामबाग, इन्दौर (म.प्र.)	sanskritcollege.indore@gmail.com
3.	शासकीय वेंकट संस्कृत महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)	hegscgwa@mp.gov.in
4.	शासकीय अभ्यानंद वेंकट संस्कृत महाविद्यालय, कल्याणपुर, जिला शहड़ोल (म.प्र.)	hrgascskalsha@mp.gov.in
5.	शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, भीतरी, जिला सीधी (म.प्र.)	rspandey109@gmail.com
6.	शासकीय पुरूषोत्तम संस्कृत महाविद्यालय, खजुरीताल जिला सतना (म.प्र.)	govtsanskritcollegekhajurital@gmail.com
7.	शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर, जिला पन्ना (म.प्र.)	hegscgedevpan@mp.gov.in
8.	शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)	hegscgwa@mp.gov.in
9.	शाासकीय रामानंद संस्कृत महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)	ramananadsanskrit@gmail.com
10.	नगर निगम श्री लोकनाथ शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, गोविन्दगंज, जबलपुर (म.प्र.)	nnslnshastri1939@gmail.com
11.	श्री नारायण संस्कृत महाविद्यालय, कटनी (म.प्र.)	sanskritcollegekatni@gmail.com
12.	श्रीरामनाम संस्कृत महाविद्यालय, अक्षयवट, चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)	shriramnamvidyalaya@gmail.com
13.	श्री ऋषिकुमार संस्कृत महाविद्यालय, पीलीकोठी, चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)	prashagovind.1801@gmail.com
14.	श्रीराम संस्कृत महाविद्यालय, जानकीकुंड, चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)	suilkumar.ram@gmail.com
15.	श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)	drhbhargav@gmail.com
16.	श्री रावतपुरा सरकार संस्कृत महाविद्यालय, रावतपुरा धाम, लहार, जिला भिण्ड (म.प्र.)	sktcollege2017@gmail.com
17.	श्री गणेश संस्कृत महाविद्यालय, गढ़ाकोटा, जिला सागर (म.प्र.)	sgsmgarhakota@gmail.com
18.	श्री मधुकर शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, देवास मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)	smssmujjain@gmail.com
19.	श्री आद्या एज्युकेशनल इंस्टिट्यूट, उज्जैन (म.प्र.)	rahulbarod070398@gmail.com
20.	श्री दन्दौआ धाम संस्कृत महाविद्यालय, मेहगांव, जिला भिण्ड (म.प्र.)	dandrauasarkar@gmail.com

विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाएँ

समृद्ध पुस्तकालय एवं वाचनालय - विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के अध्ययन हेतु सभी विषयों की पुस्तकें एवं दुर्लभ पाण्डुलिपि ग्रन्थ उपलब्ध है।

सान्ध्य संस्कृत विद्यालय - आम जनमानस को संस्कृत भाषा के सामान्य ज्ञान एवं संस्कृत में सम्भाषण कौशल विकसित करने हेतु संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण तथा ज्ञान विज्ञान संवर्धन केन्द्र द्वारा सान्ध्य संस्कृत विद्यालय संचालित किया जाता है, जो पूर्णतः निःशुल्क है।

प्रतियोगी परिक्षाओं हेतु मार्गदर्शन - UGC, NET, JRF, SET इत्यादि स्पर्धात्मक परीक्षाओं का योग्य अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है एवं अनेक स्पर्धाओं में विद्यार्थी चयनित हुए है।

शास्त्रार्थ कौशल प्रशिक्षण - न्याय, वेदान्त मीमांसा, व्याकरण आदि विषयों पर प्रशिक्षण की व्यवस्था।

संस्कृत संभाषण संस्कृत लेखन, अनुवाद प्रशिक्षण- विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण की सुविधा।

संस्कृत नाट्य प्रशिक्षण - संस्कृत नाटकों में अभिनय कौशल विकसित करने हेतु नाट्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

कर्मकाण्ड प्रशिक्षण, काव्य कौशल प्रशिक्षण-पौरोहित्य कर्म में निपुणता हेतु कर्मकाण्ड प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

दुर्गापूजन पाठ विधान प्रशिक्षण - प्रत्येक वर्ष 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन।

वैदिक गणित प्रशिक्षण-गणित की वेदोक्त पद्धतियों का अध्यापन कराया जाता है।

पूर्व छात्र परिषद् - विश्वविद्यालय में पूर्व छात्र परिषद् सक्रिय रूप से कार्यरत है। वि.वि. के प्रत्येक कार्य में सहयोग प्रदान करती है।

लिपि प्रशिक्षण-भारतीय लिपियों के लेखन पाठन के प्रशिक्षण की सुविधा।

वास्तु, ज्योतिष, हस्तरेखा, मन्दिर प्रबन्धन आदि में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

दीक्षान्त समारोह प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। जिसमें महनीय व्यक्तित्त्व द्वारा उपाधियाँ प्रदान की जाती है।

हरा-भरा बहुउद्देशीय क्रीड़ांगण - विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु खेल सुविधा उपलब्ध।

संगणक प्रशिक्षण - कम्प्युटर में दक्षता हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

निःशुल्क योग प्रशिक्षण -योग की विभिन्न आसनों का एवं प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु छात्र आधारित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन।

संस्कृतमय वातावरण में संस्कृत संभाषण का आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन।

लघु चलचित्र निर्माण हेतु मार्गदर्शन - शॉट संस्कृत फिल्मों के निर्देशन एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन।

सांस्कृतिक भ्रमण - समय-समय पर सांस्कृति क एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करवाया जाता है।

गुरुकुल पद्धति से अध्यापन - परम्परागत एवं गुरुकुल पद्धति से अध्यापन की व्यवस्था उपलब्ध है।

संस्कृत समवाय का आयोजन-संस्कृत कविता एवं वाक्य सृजन हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

आंग्लभाषा दक्षता प्रशिक्षण-संस्कृत भाषा के ज्ञान के साथ आधुनिक ज्ञान में निपुणता हेतु अंग्रेजी भाषा के प्रशिक्षण की सुविधा।

NCC- नेशनल क्रेडिट कोर छात्रों में राष्ट्रीय भावना के विकास हेतु NCC की विश्वविद्यालय में सुविधा उपलब्ध।

NSS- राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से सेवा कार्य को बढ़ावा देने की दृष्टि से NSS ईकाई कार्यरत है।

छात्रवृत्ति-विश्वविद्यालय में अध्ययनरत नियमित छात्र, म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग की विभिन्न छात्रवृत्ति योजना का लाभ ले सकते है।

SC/ST तथा OBC छात्रों को मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रवेश छात्रवृत्ति की विशेष सुविधायें उपलब्ध करायी जाती है।

छात्रावास-छात्रों हेतु छात्रावास की सुविधा प्रदान की जाती है।

विश्व रिकार्ड

दिनांक 23.08.2018 को विश्वविद्यालय कुल ने अपनी कुलाधिपति महोदया श्रीमती आनंदी बेन पटेल, माननीय राज्यपाल, मध्यप्रदेश की गरिमामयी उपस्थिति में न्यूनतम समय में क्रमशः 1100 हाथों से अग्रसर करते हुए 1100 पौधे लगाने का गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किया गया।

दिनांक 16.07.2019 को माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल की प्रेरणा से गुरुपूर्णिमा को सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में एक साथ पीपल पादप रोपण के विश्व रिकार्ड के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में माननीय कुलपति प्रो. पंकज एल. जानी की अध्यक्षता में षष्टि संवत्सर और दिशाओं के प्रतीक पीपल पादपों का रोपण किया गया।

शास्त्रार्थ सभा

दिनांक 13.01.2020 को विश्वविद्यालय कुलाधिपति मध्यप्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री लालजी टण्डन की प्रेरणा से मध्यप्रदेश राजभवन के सान्दीपनि सभागार में अखिल भारतीय शास्त्रार्थ सभा का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के विद्वान् आचार्यों तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधारे मूर्धन्य विद्वानों ने व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष एवं न्याय विषयों में शास्त्रार्थ किया। शास्त्रार्थ को देखने-सुनने हेतु दो-तीन दिवसों में ही प्रदेश के 700 से अधिकजनों ने पंजीयन कराया, जो कि समाज में विद्यमान भारतीय मूल्यों के जीवित रहने का संकेत है।